بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Ph:+91-1872-220186, Fax:+91-1872-224186, Mob.98150-16879, E-Mail:ansarullah@qadian.in

.Mob:9682536974, Khulasa khutba of 27.06.25

मक्का युद्ध में विजय प्राप्त करते समय आँहुज़ूर ﷺ का अपने सहाबियों के साथ मक्का में प्रवेश तथा अबू सुफ़यान के इस्लाम लाने का वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः जुमः

सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ि,

यू.के., , स्थान मस्जिद मुबारकबयान फर्मूदः 27 जून 2025

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया– आँहज़रत ﷺ के अपनी सेना के साथ चुप-चाप मक्का के निकट पहुँचने तथा पड़ाव डालने का वर्णन हो रहा था। आप ﷺ ने दस हज़ार जगह आग जलवाई, अबू सुफ़यान तथा उसके साथियों ने इस चीज़ को देखा और बड़े घबराए, इसका विस्तृत वर्णन पहले बयान हुआ था, इसके अंतर्गत और आगे का विवरण बयान करता हूँ।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. इसका वितार पूर्वक वर्णन एक स्थान पर इस प्रकार बयान करते हैं कि हज़रत अब्बास रज़ी. चूंकि अबू सुफ़यान के पुराने मित्र थे, इस लिए उन्होंने उसे रसूलुल्लाह ﷺ की सेवा में पेश होने के लिए तय्यार किया और अपने साथ ऊँट पर बिठा कर आप ﷺ की मजलिस में पहुंचा दिया। अबू सुफ़यान, रसूलुल्लाह ﷺ के निकट पहुंचा तो इस्लाम की सेना का विशाल प्रदर्शन, भव्य दृश्य तथा अनुशासन देख कर आश्चर्य एवं भय में डूब गया। उसके दिल में घोर परिवर्तन आ चुका था, क्यूंकि वह अभी सात साल पहले के दिन याद कर रहा था जब रसूलुल्लाह ﷺ को मक्के से निकला गया था, और आज वही रसूल ﷺ दस हज़ार की सेना लेकर वापस आ चुके थे, बिना किसी उपद्रव एवं अत्याचार के। रसूलुल्लाह ﷺ ने अबू सुफ़यान की अवथा को अनुभव करते हुए फ़रमाया कि इसे रात को हज़रत अब्बास रज़ी. के साथ रहने दिया जाए ताकि वह स्वंय स्थिति

का आभास करके निर्णय ले सके। जब फज्र का समय हुआ तो अबू सुफ़यान ने मुसलमानों को वज़ू करते, सफें बनाते और नमाज़ पढ़ते हुए देखा और घबरा गया कि संभवतः यह कोई नए प्रकार का दंड है। हज़रत अब्बास रज़ी ने उसे बताया कि यह नमाज़ है। नमाज़ के समय जब अबू सुफ़यान ने देखा कि हज़ारों मुसलमान रसूलुल्लाह ﷺ के पीछे रुकूअ एवं सजदा कर रहे हैं तो उसने हज़रत अब्बास रज़ी. से कहा कि मैंने किसरा एवं कैसर के दरबार देखे हैं, परन्तु ऐसी निष्ठावान क़ौम नहीं देखी जैसी मुहम्मद ﷺ के साथ है। हज़रत अब्बास रज़ी. ने फिर कहा कि अब उचित है कि तुम रसूलुल्लाह ﷺ से क्षमा याचना की प्रार्थना करो। जब नमाज़ पूरी हो गई तो हज़रत अब्बास रज़ी, अबू सुफ़यान को लेकर रसूलुल्लाह ﷺ की सेवा में उपस्थित करने के लिए ले गए। रसूलुल्लाह ﷺ ने अबू सुफ़यान से तौहीद एवं रिसालत पर ईमान लाने के बारे में सवाल किया। अबू सुफ़यान ने तौहीद को तो स्वीकार कर लिया किन्तु रिसालत के बारे में कुछ दुविधा प्रकट की, जबकि उसके साथी हकीम बिन हिज़ाम तथा एक अन्य व्यक्ति मुसलमान हो गए थे, बाद में अबू सुफ़यान भी इस्लाम ले आया, परन्तु उसका दिल पूर्ण रूप में मक्का पर विजय के बाद खुला। हकीम बिन हिज़ाम रज़ी. ने रसूलुल्लाह ﷺ से सवाल किया कि क्या यह सेना अपनी ही क़ौम को नष्ट करने आई है? रसूलुल्लाह ﷺ ने स्पष्ट किया कि मक्के वालों ने अत्याचार किए एवं प्रतिज्ञा का खंडन किया, हरम में रक्तपात किया, इस लिए यह क़दम उठाना अनिवार्य था। फिर भी आप स. ने स्पष्ट किया कि जो लोग तलवार नहीं उठाएंगे अथवा घरों में बैठे रहेंगे, अथवा अबू सुफ़यान, हकीम बिन हिज़ाम अथवा मस्जिदे हराम में शरण लेंगे, उन्हें शरण में लिया जाएगा।

हज़रत अब्बास रज़ी. ने अबू सुफ़यान के विषय में शंका जताई कि उसका इस्लाम अभी कमज़ोर है। रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि उसे रोक लिया जाए ताकि वह इस्लाम की सेना को अपनी आँखों से देखे। अतः हज़रत अब्बास रज़ी. ने अबू सुफ़यान को एक घाटी में रोक लिया, जहां से क़बीलों की सेनाएं गुज़रने लगीं। अबू सुफ़यान ने इस्लाम की सेना का शक्ति प्रदर्शन देखा। अंसार के दल के सरदार हज़रत सअद बिन अबादः रज़ी. ने जोश में कहा कि आज लड़ाई का दिन है, आज कअबे की प्रतिष्ठा शेष नहीं रहेगी। जिस पर अबू सुफ़यान ने आलोचना पूर्वक कहा कि यह दिन विनाश का दिन हो सकता है। फिर रसूलुल्लाह ﷺ स्वंय भी एक सेना का नेतृत्व करते हुए आए, जिसका झंडा हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ी. के पास था। एक अन्य रिवायत के अनुसार जब रसूलुल्लाह स. अबू सुफ़यान के पास से गुज़रे तो उसने कहा कि या रसूलुल्लाह! क्या आप स. ने अपनी क़ौम की हत्या का आदेश पारित कर दिया है? क्या आप स. नहीं जानते कि सअद बिन अबादा इस इस तरह कह रहा था, मैं आप स. को आपकी क़ौम के बारे में अल्लाह तआला का वास्ता देता हूँ, आप स. सब लोगों से बढ़कर पवित्र, निकट सम्बन्धों का ध्यान रखने वाले और दया करने वाले हैं। रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया कि सअद ने ग़लत कहा, आज का दिन तो रहमत का दिन है, आज अल्लाह तआला कअबे को प्रतिष्ठा प्रदान करेगा और अल्लाह तआला क़ुरैश को वास्तविक सम्मान प्रदान करेगा। रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत सअद रज़ी. की ओर सन्देश भेजा और उनसे झंडा ले लिया और उनके बेटे हज़रत क़ैस रज़ी. को वह झंडा प्रदान किया।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. इसके विषय में बयान फ़रमाते हैं कि इस प्रकार आप स. ने मक्के

वालों का दिल भी रख लिया और अंसार के दिलों को भी क्षति पहुँचने से बचा लिया, और रसूलुल्लाह स. को क़ैस पर पूरा भरोसा भी था, क्यूंकि क़ैस अत्यंत सज्जन प्रकृति के नौजवान थे। इब्ने अबी शेबा ने रिवायत किया है कि हज़रत अब्बास रज़ी. ने कहा कि या रसूलुल्लाह ﷺ! आप मुझे आज्ञा दें तो मैं मक्का वालों के पास जाऊं और उन्हें दावत दूं, और आप स. उन्हें भी अपनी शरण दे दें। अतएव वे रसूलुल्लाह स. के शहबा नामक ख़च्चर पर सवार होकर रवाना हो गए। वे मक्के में दाख़िल हुए और उन्होंने कहा कि ऐ मक्का के निवासियों! इस्लाम स्वीकार कर लो मुक्ति पा जाओगे, तुम्हारे पास इतनी बड़ी सेना आई है जिसका मुक़ाबला करने का तुम में सामर्थ्य नहीं है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. बयान फ़रमाते हैं कि जबकि अबू सुफ़यान अपने दिल में ख़ुश था कि मैंने मक्के के लोगों की मुक्ति का मार्ग निकाल लिया है, उसकी पत्नी हिन्दः जो इस्लाम के आरम्भ से ही मुसलमानों से द्वेष एवं शत्रुता रखने की प्रेरणा लोगों को देती चली आई थी और काफ़िर होने के बावजूद वास्तव में एक वीरांगना थी, आगे बढ़कर अपने पति की दाढ़ी पकड़ी और मक्के वालों को पुकारना शुरू किया कि आओ इस बुड्ढे मूर्ख की हत्या कर दो कि बजाए इसके कि यह तुमको नसीहत करता कि जाओ अपने प्राणों तथा नगर की रक्षा के लिए लड़ते हुए मारे जाओ, यह तुम में शांति की घोषणा कर रहा है। अबू सुफ़यान ने उसकी इस हरकत को देख कर कहा कि हे मूर्ख! यह इन बातों का समय नहीं, जा और अपने घर में छिप जा, मैं उस सेना को देख कर आया हूँ कि जिस सेना का विरोध करने की शक्ति पूरे अरब में नहीं है।

इस्लाम की सेना का मक्के में प्रवेश होना, बुख़ारी में लिखा है कि हज़रत उर्वा रज़ी. से रिवायत है कि आप स. ने हज़रत ज़ुबैर रज़ी. को निर्देश दिया कि मक्के के ऊपर वाले क्षेत्र कदा नामक की ओर से दाख़िल हों और अपना झंडा हिजोन में गाड़ दें और आप ﷺ के आने तक वह स्थान न छोड़ें। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी. सेना के दाएं भाग पर नियुक्त थे, उनके दल में असलम, सुलैम, गिफ़ार, मुज़ैना तथा जुहैनियः नामक क़बीले शामिल थे। रसूलुल्लाह स. ने उन्हें आदेश दिया कि वे मक्का मुकर्रमा के निचले क्षेत्र से दाख़िल हों। आप स. उन्हें निकट वाले घरों के पास झंडा गाड़ देने का निर्देश दिया। आँहज़रत ﷺ ने हज़रत अबू उबैदः बिन अल्जर्राह रज़ी. की नियुक्ति पैदल चलने वाले दस्ते पर की। आँहज़रत ﷺ ने अपने अफ़सरों को आदेश दे रखा था कि वे लड़ाई से अपने हाथ रोके रखें, केवल उसके साथ लड़ें जो उनसे लड़ने के लिए आए।

जब रसूलुल्लाह ﷺ मक्के में प्रवेश होने के निकट पहुँच गए तो मक्का के कुछ जनमान्य सरदार, जैसे सफ़वान, इकरिमा एवं सुहैल ने मुसलमानों से युद्ध करने की तय्यारी कर ली और खंदमः नामक स्थान पर क़ुरैश, बनू बकर तथा हज़ेल के लोगों को जमा किया, वे क़समें खा रहे थे कि मुहम्मद (ﷺ) अपनी शक्ति के बल पर मक्के में दाख़िल नहीं हो सकेंगे। बनू बकर का एक व्यक्ति जमाश बिन क़ैस भी अति अहंकार के साथ तय्यार हुआ, परन्तु उसकी पत्नी ने उसको चेतावनी दी कि मुहम्मद (ﷺ) का मुक़ाबला सम्भव नहीं, फिर भी वह खंदमः गया। जब हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी. की सेना ने वहाँ से मक्के में प्रवेश करना चाहा तो उन मुशरिकों ने विरोध किया और इस प्रकार युद्ध छिड़ गया। इसके परिणाम स्वरूप बनू बकर के 20 तथा हज़ेल के 3 या 4 लोग मरे गए और दुश्मनों को घोर पराजय हुई तथा वे इधर उधर बिखर गए। जिमाश बिन क़ैस भी मैदान छोड़ कर घर की ओर

भागा और अपनी पत्नी से कहा कि दरवाज़ा बंद कर दो। पत्नी ने उसपर कटाक्ष किया तो जमाश ने खिसयाकर एक कविता कि कुछ पंक्तियाँ पढ़ीं जिनका अर्थ यह था कि यदि वह खंदमा का युद्ध देख लेती तो जान लेती कि सफ़वान, इकरिमा सब भाग चुके थे और तलवारें उनके सिरों पर बरस रही थीं। बुख़ारी में है कि हज़रत ख़ालिद रज़ी. के घुड़ सवारों में से दो व्यक्ति मारे गए, अब जबकि मक्के वाले शरण मांग रहे थे, ऐसे में आँहज़रत स. अपने बलिदानी प्रेमियों एवं वफ़ादार साथियों को नहीं भूले थे, आप स. को निश्चित ही कुछ वर्ष पूर्व मक्के की ही गलियों में ढाए जाने वाले अत्याचार एवं कष्ट भी याद आ रहे होंगे। वे बिलाल रज़ी. भी, जिनको रस्सियों से बाँध कर, यहाँ उन्हें पथरीली गलियों में घसीटा जाया करता था। आज वह बिलाल इस विजयी सेना में शामिल थे। उनके मस्तिष्क में भी कष्ट एवं पीड़ा के समस्त दृश्य प्रकट हो चुके होंगे। आप स. ने इसका बदला लेना भी आवश्यक समझा और आंहज़रत स. ने कैसा सुन्दर बदला लिया। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. बयान करते हैं कि मक्का पर विजय के अवसर पर आंहज़रत ﷺ ने बिलाल रज़ी. के भाई अबी रवीहा रज़ी. को झंडा दिया और एलान किया कि जो इस झंडे के नीचे आ जाए, उसे शरण दी जाएगी। साथ ही बिलाल रज़ी. को आदेश दिया कि वह स्वंय मक्के की गलियों में जाकर यह घोषणा करें। यह योजना एक गहरी कार्य शैली एवं इस्लाम के उच्च नैतिक व्यवहार की अभिव्यक्ति थी। बिलाल रज़ी. वही व्यक्ति थे जिन्हें मक्के की इन्हीं गलियों में कष्ट एवं अत्याचार का निशाना बनाया गया था। परन्तु रसूलुल्लाह ﷺ ने बदला तलवार से नहीं लिया बल्कि बिलाल को शान्ति की घोषणा करने वाला प्रतिनिधि बना दिया। इस युक्ति से हज़रत बिलाल रज़ी. के दिल से बदले की आग, प्रेम एवं सदभावना में बदल गई। बिलाल रज़ी. इस इस क्षण को अनुभव कर रहे होंगे कि वह जो कभी गुलाम था तथा अपमान का निशाना बनता था, आज उन्हीं लोगों को शान्ति की शरण दे रहा है। यह बदला हज़रत यूसुफ़ अलै. के बदले से भी अधिक महान था, क्यूंकि हज़रत यूसुफ़ अलै. ने भाइयों को क्षमा किया जबकि रसूलुल्लाह ﷺ ने अपनी क़ौम को एक सेवक के माध्यम से क्षमा किया। यह अमल न केवल इस्लाम के न्याय एवं दया का उच्चतम उदाहरण था बल्कि बिलाल रज़ी. जैसे दुर्बल एवं पीड़ित व्यक्ति का अपूर्व सम्मान भी, जो संसार के इतिहास में सदेव याद रखा जाएगा।

अन्त में हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि अतः यह है हमारे आक़ा व मुताअ का बदला लेने का सुन्दर मार्ग! **अल्लाहुम्मा सल्ली अला मुहम्मदिवं व आलि मुहम्मदिन व बारिक व सल्लिम इन्नका हमीदुम्मजीद।** और फ़रमाया कि यह मक्का में दाख़िल होने का आरम्भिक बयान है, यह इंशाल्लाह आगे भी बयान होगा।

ख़ुतबः के अन्त में मुकर्रमा अमीना शहनाज़ साहिबा पत्नी मुकर्रम इनामुल्लाह साहब आफ़ लाहौर का सदवर्णन करते हुए नमाज़ के बाद जनाज़े की नमाज़ अदा करने की घोषणा भी फ़रमाई।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ.

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम, सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक- 9781831652

18001032131-टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, पंजाब